जीवन विरह का नवजात

महादेवी वर्मा

वेदना, करूणा तथा पीड़ा की रागगत्मक वृत्तियों की गायिका श्रीमती महादेवी वर्मा के व्यक्तित्व पर भगवान बुद्ध के दु:खवाद का विशेष प्रभाव पड़ा है। वैयक्तिक जीवन में असीम प्यार, दुलार तथा सुख साधन प्राप्त होने पर भी कवयित्री के मन में कुछ अभाव ऐसे रहे जिनसे वह दुख को ही जीवन का सर्वस्व मान बैठी। उपनिषदों के तत्वज्ञान से जीवन की नश्वरता, परिवर्तन शीलता तथा आत्मा-परमात्मा के चिरंतन के संबंध का ज्ञान तथा बौद्ध दर्शन से संसार की असारता तथा दु:खवाद प्राप्त कर महादेवी जी ने अपने काव्य में महाकरुणा की ही अभिव्यक्ति की है। प्रस्तुत गीत में जीवन की दुखमयता का ही भावपूर्ण चित्रण किया गया है। आत्मा, परमात्मा से अलग होकर संसार में आती है तो वहां का आकर्षण उसे घेर लेता है। किंतु दुख अथवा करुणा का स्पर्श पाकर आत्म तत्व का प्रचार होता है। विश्व से करुणा का संबंध जुड़ता है, तो विश्वात्मा के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न होती है। यही जिज्ञासा आत्मज्ञान की ओर उन्मुख करती है, तो एक ओर विश्व का कण-कण उसे करूणा से प्लावित दिखाई देता है और आत्मा उस परम तत्व के मिलन की मुस्कान में खो जाना है अपना परम लक्ष्य मान लेती है। इस भावना का प्रतिपादन ही प्रस्तुत गीत में किया गया है।

1. "बिरह का जल जात जीवन ....गिनती रात।"

महादेवी जी विरह-व्यथा से आपुर्ण जीवन का परिचय देती हुई लिखती है जीवन-कमल विरह से उद्भूत हुआ है। कमल सदृश कोमल, सुंदर आकर्षक अथवा माधुर्य युक्त दिखाई देने वाला यह जीवन विरह जल से ही उत्पन्न होता है। परम तत्व से विलग होकर, उस करूणामय से विमुख होकर जब आत्मा नवजीवन में पदार्पण करती है। तो भी वह करूणा तथा वेदना उसमें बनी रहती है। वेदना में इसका जन्म होता है और करुणा में ही इसकी स्थिति रहती है। सुख-दुख आशा-निराशा की अनुभूतियों से भरपूर इस जीवन अथवा जगत का प्रभात भी अश्रुओं को चुभता हुआ उदय होता है और रात भी मानव जीवन के आंसुओं को ही गिनती रहती है। विरह-जल में उत्पन्न जीवन-कमल में वेदना तथा करुणा को व्यक्त करते हुए कवयित्री ने प्राकृतिक सौंदर्य की अत्यंत सुंदर अभिव्यंजना की है। प्रभात आती है तो प्रकृति पर बिखरे ओस कली को चुनती है और रात आती है तो वह भी अपने अश्रु भी खेलती रहती है। सुख हो अथवा दुख यह जीवन उस करूणा से ही प्लावित तथा अनुप्राणित रहता है। यहां वेदना का मार्मिकता के साथ चित्रण हुआ है।

2. "आंसुओं का कोष उर.....करुण बरसात।"

शाश्वत करूणा की व्यापकता का चित्रण करते हुए महादेवी जी जीवन के प्रत्येक अंग अथवा स्वरूप को अश्रुमय रूप देते हुए लिखती हैं। हृदय अपनी अनुभूतियों की गहनता के कारण आंसुओं का अक्षय भंडार है तो आंखें आंसुओं की टकसाल है। नश्वर, क्षणभंगुर किंतु कोमल शरीर भी तो जल-कणों से निर्मित बादलों के समान है। हृदय भावानुभूति की तीव्रता प्राप्त करता है, मानसिक संवेदनाएं अश्रु बनकर आंखों से प्रवाहित होती है। चीर वियोगिनी आत्मा उस अनुभूति को निरंतर व्यक्त करती रहती है। जिस प्रकार बादलों की कोमलता, सरसता में बिजली की तड़प तथा संघर्ष ही वर्षारूपी आंसुओं में परिणत हो जाती है, उसी प्रकार की भावनाएं आंसुओं में प्रकट होती रहती है।

वसंत आता है, समस्त सौंदर्य तथा सुषमा को संजोकर, किंतु उसके मन में भी महाकरुणा व्याप्त रहती है जो मकरंद कणों के रूप में व्यक्त हो जाती है। करुणाप्लावित वर्षा ऋतु आती है तो समस्त वातावरण उसके आंसुओं से आच्छादित हो जाता है। आंसुओं की हट जैसे विश्व जीवन को अपने में समाहित कर लेना चाहती है। बाह्य रूप से सुंदर, आकर्षक तथा मोहक प्रकृति आंतरिक रूप में तो उस करूणा का ही प्रतिरूप है जिसे जिससे उसका जन्म हुआ है। यहां महादेवी के वेदनावाद की सफल अभिव्यक्ति हुई है।

3. " काल इसको दे गया.....स्मिथ का प्रात।"

व्यथा, पीड़ा, दुख और आंसुओं से भरपूर जीवन का वर्णन करते हुए कवयित्री इस पद्यांश में करुणेश के मिलन की कल्पना करते हुए कहती है। जीवन का प्रत्येक पल आंसुओं से आवृत है। प्रतिपल अश्रु प्रवाहित करना ही जिसका भाग्य हो चुका है,

उसके जीवन में सुख का तो लेश मात्र नहीं। इसके जीवन की जानकारी पाने के लिए वायु भी केवल आँहें भर कर रह जाती है। इस प्रकार निराशा पूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति करते हुए कवयित्री उसकी संभावित आशा का अत्यंत आकर्षक रूप प्रस्तुत करते हुए कहती है कि यदि तुम्हारी मधुर मुस्कान की एक झलक, जो विश्व के समस्त सौन्दर्य, आनंद तथा प्रेम का अलौकिक प्रकाश है, इस जीवन को प्राप्त हो जाए तो यह उसी प्रकार खिल उठेगा जिस प्रकार प्रभात रश्मियों का स्पर्श पाकर कमल विकसित हो जाता है। कवयित्री जीवन को परम तत्व का लीला कमल तथा जीवन की गतिविधि का एकमात्र सूत्रधार, साध्य अथवा प्राप्य भी असीम को मानकर अपना भावात्मक संबंध स्थापित करती है। यहाँ प्रकृति का संवेदनात्मक रूप में चित्रण हुआ है।